दादा भगवान परिवार का

दिसम्बर २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

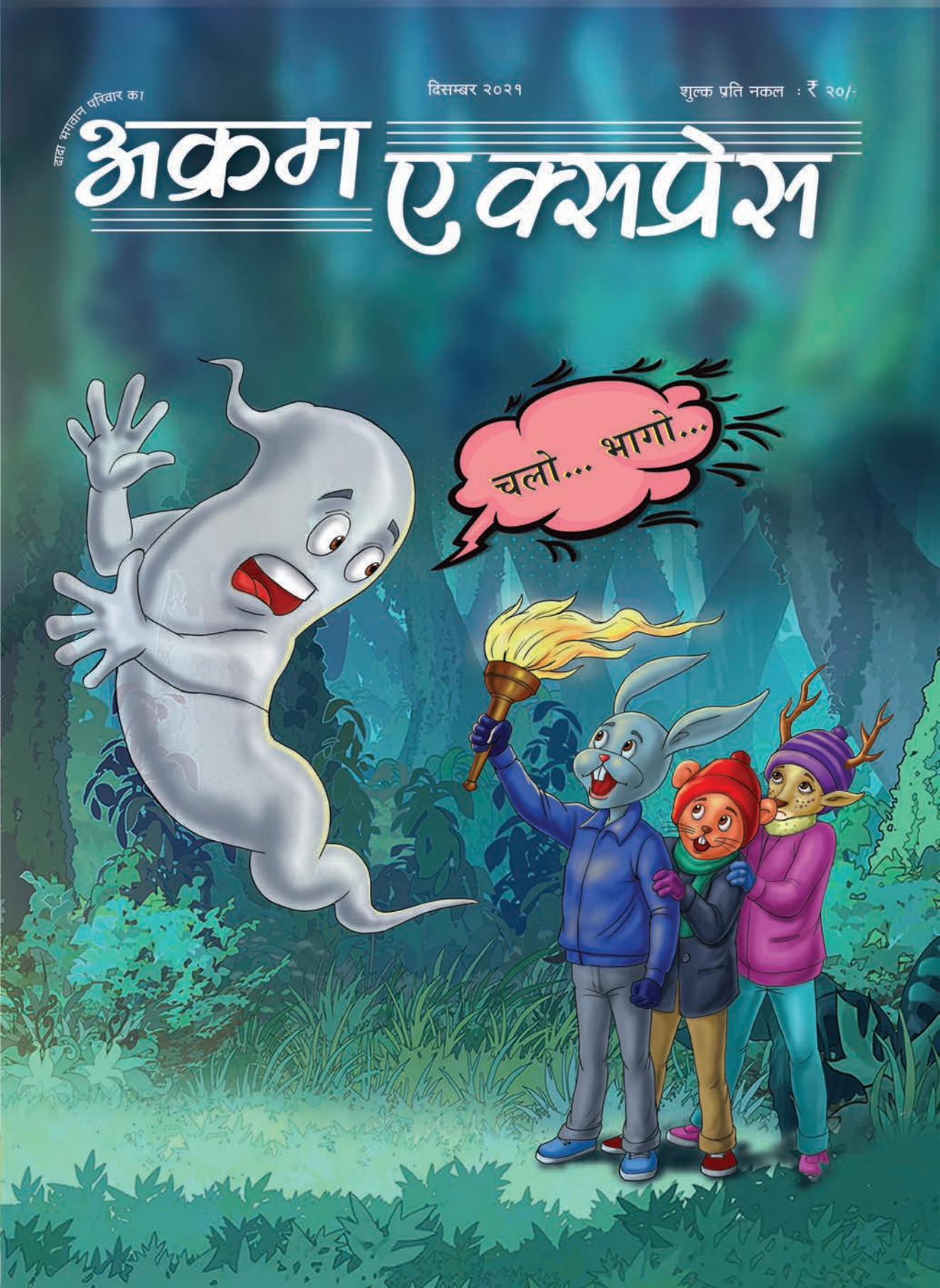

संपादकीय

बालमित्रों,

हर साल परीक्षा आती है और हर साल हम पास भी होते हैं। लेकिन फिर भी परीक्षा का डर जाता नहीं है। कभी-कभी कॉम्पिटिशन में भाग लेने या स्टेज पर परफॉर्म करने में भी डर लगता है। डॉक्टर हमारा इलाज करते हैं, पर फिर भी डॉक्टर के पास जाने में हमें डर लगता है। अरे, कई बार तो हमें अँधेरे में या किसी अनजान व्यक्ति के साथ बात करने में भी डर लगता है!

कभी सोचा है कि इन सभी प्रकार के डर का क्या कारण है? क्या हमने कभी अनुभव करके देखा है कि हम जिससे डरते हैं, वास्तव में उससे डरने जैसा कुछ है भी या नहीं? यह वास्तविक भय है या सिर्फ काल्पनिक भय है? क्या सभी प्रकार के डर को जीतने का कोई उपाय होगा?

तो चलो, इस अंक में हम सभी प्रश्नों के जवाब प्राप्त करें और दादाश्री के द्वारा दी गई समझ से डर को फुर्ररर करके मुक्तता का आनंद लें!

- डिम्पल मेहता

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2021, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : १३ अंक : ८
अखंड क्रमांक : १०५
दिसम्बर २०२१

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६१९६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

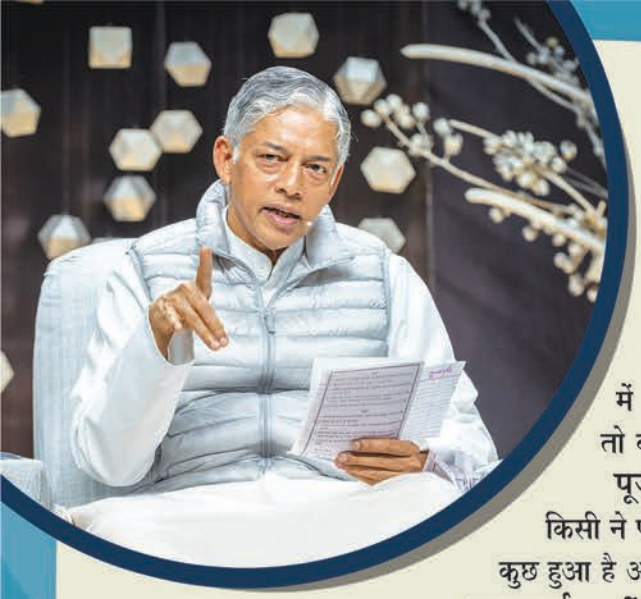

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मुझे भय बहुत लगता है। बाहर पब्लिक में जाना हो या किसी अनजान व्यक्ति से बात करनी हो तो बहुत ही भय लगता है।

पूज्यश्री : क्या तुम्हें आज तक कोई तकलीफ पड़ी है? किसी ने परेशान किया हो, किसी ने डाँटा हो, मारा हो, क्या ऐसा कुछ हुआ है आज तक?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : आप सिर्फ मानते ही हैं कि ऐसा होगा, वैसा होगा। लेकिन कभी कुछ हुआ तो नहीं! और देखो, अभी दस हज़ार लोग आपको सत्संग में देख रहे हैं और आप आराम से प्रश्न पूछ रहे हो न? अतः आप एक बार प्रयोग करके देखो, अगर मन बताता है कि 'ऐसा होगा तो?' तो आप कहना कि नहीं, ट्राई तो करो। धीर-धीरे हिम्मत करके बात करके देखना। फिर आपको अनुभव होगा कि कोई तकलीफ नहीं हुई।

मेरे साथ एक बार ऐसा हुआ कि खिड़की के बाहर दो लाइटें चमक रही थीं। मुझे एकदम घबराहट हो गई कि यह क्या है? फिर हुआ कि चेक करके देखूँ। देखा तो एक बिल्ली बैठी हुई थी। अतः घबराना नहीं चाहिए बल्कि देखना चाहिए कि क्या है। देखोगे तो अनुभव होगा कि कोई तकलीफ नहीं हुई। मैं जैसा मानता था वैसा कुछ हुआ नहीं। समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : जब जागे तभी सवेरा। नए सिरे से शुरुआत करो। पिछला डर हाज़िर हो जाए कि 'ऐसा होगा तो?' तो कहना कि "मुझे देखने दो, क्या होता है।" वास्तव में हुआ? नहीं हुआ। ये चिड़ियाँ होती हैं न, चिड़ियाँ दाना चुगती हों और पटाखे फूटे तो पहली बार तो सब उड़ जाती हैं। फिर दूसरी बार पटाखा फूटता है तो दो-चार उड़ती हैं और बाकी सब देखती हैं और दाना चुगती रहती हैं। और तीसरी बार देखती भी नहीं हैं और आराम से दाना चुगती रहती हैं। आप तो चिड़ियों से ज्यादा हिम्मत वाले हो ना?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : दादा भगवान से शक्ति माँगना कि "डर छूट जाए और मैं नॉर्मल व्यवहार कर सकूँ।" प्रार्थना करना कि दादा-नीरू माँ मेरे साथ रहना, तो कुछ नहीं होगा।

बरगद

हिरवा के पापा की बदली बड़ौदा शहर में हुई थी। एक बार फिर से स्कूल बदलना पड़ेगा यह सोचकर ही हिरवा को डर लगने लगा।

नए स्कूल का पहला दिन था। मन ही मन डरते हुए हिरवा स्कूल पहुँची। यह स्कूल भी पुराने स्कूल के जैसा ही था। कुछ खास फर्क नहीं था। अंतिम पीरियड खेलकूद का था। सभी बच्चों को टीचर ने मैदान में जाने के लिए कहा। हिरवा अपनी जगह पर ही बैठी रही। पास में बैठी ग्रीवा ने इशारे से हिरवा को साथ में आने के लिए कहा। इसलिए ज़बरदस्ती उसे मैदान में जाना पड़ा।

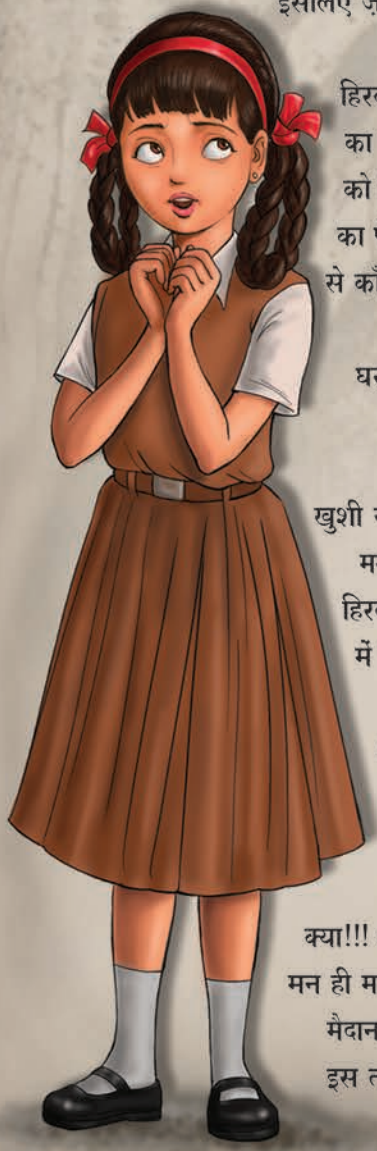

सभी बच्चे स्कूल से परिचित थे ही इसलिए फटाफट जाकर सेट हो गए। हिरवा धीरे-धीरे आसपास देखते हुए चल रही थी। तभी उसे सामने एक बड़ा बरगद का पेड़ दिखाई दिया। बरगद के पेड़ को देखकर हिरवा वहीं स्टैच्यू हो गई। हिरवा को जिस बात का डर था वही हुआ। नए स्कूल में तो पुराने स्कूल से भी बड़ा बरगद का पेड़ था। "अब, मैं इस स्कूल में कैसे पढ़ूँगी?" यह सोचकर ही हिरवा के पैर भय से काँपने लगे।

जैसे-तैसे करके नए स्कूल में हिरवा का पहला दिन पूरा हुआ। घर आते ही मम्मी ने पूछा, "बेटा, स्कूल का पहला दिन कैसा रहा?"

'अच्छा रहा।' ऐसा कहकर हिरवा अपने रूम में चली गई।

दूसरे दिन स्कूल जाने के लिए हिरवा तैयार हुई लेकिन उसके चेहरे पर खुशी नहीं थी।

मम्मी-पापा को ऐसा लगा कि शायद अभी कोई नए दोस्त नहीं बने हैं इसलिए हिरवा को पुराने स्कूल की याद आती होगी। इस तरह एक हफ्ता बीत गया। स्कूल में हिरवा की पहचान ग्रीवा के साथ हुई।

इस सप्ताह फिर से बुधवार को गेम्स का पीरियड आया। टीचर ने क्लास में अनाउन्स किया, "आज हम फटाफट पेड़ पर चढ़ने और उतरने का खेल खेलेंगे।"

यह सुनते ही सभी बच्चे ग्राउन्ड की ओर दौड़ पड़े।

लेकिन यह सुनते ही हिरवा को चक्कर आ गए, 'ऐसा कोई खेल होता है क्या!!! आज तो मैं क्लास में ही बैठी रहूँगी। मैं ग्राउन्ड पर जाऊँगी ही नहीं।' हिरवा ने मन ही मन तय किया। लेकिन हिरवा का हाथ पकड़कर ग्रीवा उसे अपने साथ ले गई।

मैदान में पहुँचते ही हिरवा के पेट में दर्द होने लगा। इसलिए वह एक ओर बैठ गई। इस तरह दूसरा सप्ताह भी बीत गया।

एक दिन ऐसा हुआ कि स्कूल जाने का समय हुआ लेकिन हिरवा तैयार नहीं हुई। मम्मी ने आवाज़ लगाई, 'बेटा, जल्दी तैयार हो जा। अभी स्कूल बस आ जाएगी।'

'मम्मी, आज मैं स्कूल नहीं जा पाऊँगी। मुझे पेट में बहुत दर्द हो रहा है।' हिरवा ने बहाना बनाया।

मम्मी ने पापा से कहा, 'फिर से इसका नाटक शुरू हो गया। जब पुराने स्कूल में जाती थी तब हर शनिवार के दिन इसके पेट में दर्द होने लगता था। अब बुधवार के दिन नाटक करने लगी है।'

पापा ने कहा, 'तुम एक बार हिरवा से बात कर लो। यदि सच में उसके पेट में दर्द हो रहा हो तो हम उसे डॉक्टर के पास ले चलते हैं।'

'नहीं, मुझे कहीं नहीं जाना।' अंदर वाले रूम में बैठे-बैठे ही हिरवा ने ज़ोर से कहा और धड़ाम से दरवाज़ा बंद कर दिया। मम्मी-पापा को समझ में नहीं आया कि अचानक हिरवा को क्या हो गया।

और इस तरह एक महीना बीत गया। बुधवार का दिन आते ही हिरवा नई-नई शिकायत करने लगती। शुरू-शुरू में तो किसी के ध्यान में यह बात नहीं आई। लेकिन संगीता मिस को ख्याल आ गया। उन्होंने हिरवा से सीधा कुछ नहीं पूछा। लेकिन हिरवा की फ्रेन्ड ग्रीवा से पूछा, 'ग्रीवा, हिरवा को रोज़ पेट में दर्द होता है?"

ग्रीवा ने सोचकर कहा, "नहीं, मिस। अधिकतर तो जिस दिन स्पोर्ट्स का पीरियड होता है उसी दिन उसके पेट में दर्द होता है। वह मैदान में आने के बदले क्लास में ही बैठी रहती है।"

संगीता मिस ने एक महीने तक हिरवा के बर्ताव पर नज़र रखी। उन्होंने देखा कि जब-जब स्कूल के पीछे के मैदान में जाना होता था तभी हिरवा को कुछ न कुछ तकलीफ हो जाती थी।

दूसरे दिन संगीता मिस ने क्लास में कहा, "आज हम एक गेम खेलने वाले हैं... जिसका नाम है - डर को कर फुर्ररर..."

मिस आगे कुछ कहें उससे पहले ही बच्चे बोल उठे, 'हम तैयार हैं।'

"लेकिन पहले सुनो तो सही कि गेम किस

तरह खेलना है?" कहकर मिस ने गेम के बारे में बताया, 'सभी को एक चिट्ठी में खुद के डर के बारे में लिखना है। मेरे पास हर डर को दूर करने का उपाय है। यदि आपने एक बार चिट्ठी में लिख दिया तो समझ लो कि आपका डर हमेशा के लिए फुर्ररर्र हो जाएगा, गायब हो जाएगा!'

सभी बच्चे लिखने लगे। लेकिन हिरवा बैठी रही। थोड़ी देर बाद उसने सोचा, 'मिस कह रही हैं तो एक बार ट्राई करके देखूँ। यदि सचमुच ही मिस के पास कोई जादू हो और मेरा डर गायब हो जाता हो तो कितना अच्छा!!'

सभी के साथ हिरवा ने भी चिट्ठी लिखकर मिस को दे दी।

दूसरे दिन संगीता मिस ने हिरवा को स्टाफ रूम में बुलाकर पूछा, 'तुम्हें बरगद के पेड़ से डर लगता है लेकिन किस लिए डर लगता है वह चिट्ठी में नहीं लिखा? यदि मुझे तुम्हारे डर के बारे में पता नहीं चलेगा तो मैं किस तरह उसका उपाय कर पाऊँगी??'

हिरवा ने हिचकिचाते हुए कहा, "मैं जब दूसरी कक्षा में पढ़ती थी तब मेरी फ्रेन्ड के पास बहुत अच्छा पेन था। उसके जैसा पेन लेने के लिए मैंने पापा से पूछे बिना ही उनके पॉकेट में से रुपये निकाल लिए थे। मुझे पता था कि यह गलत है। यदि पापा को इस बात का पता चल गया तो वे मुझ पर गुस्सा होंगे। और..."

हिरवा को इसके आगे कुछ बोलने की हिम्मत ही नहीं हुई। संगीता मिस ने प्रेम से हिरवा का हाथ पकड़ा और उसे हिम्मत देते हुए कहा, "कोई बात नहीं हिरवा, ऐसा तो होता है। मैं तुम्हें भरोसा देती हूँ, तुम मुझे हकीकत बता सकती हो। और.....क्या बेटा?"

हिरवा ने हिम्मत इकट्ठी करके कहा, "दो दिन बाद मेरे पड़ोस में रहने वाली दादी ने हमसे कहा कि जो बच्चे झूठ बोलते हैं और चोरी करते हैं उन्हें बरगद के पेड़ पर रहने वाला भूत पकड़ लेता है। जब से यह बात सुनी है तब से मैं बरगद के पेड़ के नज़दीक नहीं जाती। मिस, मैं नहीं चाहती हूँ कि भूत मुझे पकड़ ले।" हिरवा की आँखों में आँसू आ गए।

संगीता मिस ने हिरवा के आँसू पोछे और कहा, "चलो, आज हम तुम्हारे डर को हमेशा के लिए बाय-बाय कह देते हैं।"

संगीता मिस हिरवा को मैदान में ओ बरगद के पेड़ के पास ले गईं। हिरवा को बहुत डर लग रहा था। मिस ने हिरवा की आँखों में देखकर कहा, 'भूत बरगद के पेड़ पर नहीं लेकिन तुम्हारे मन में घुस गया है।'

हिरवा अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मिस को देख रही थी, "मतलब? बरगद के पेड़ पर कोई भूत नहीं है?"

"नहीं, कोई भूत नहीं है। बेटा, जब हम कोई गलती करते हैं तब पकड़े जाने के डर से हम उस गलती को छुपाते हैं। हमें लगता है कि अगर पकड़े जाएँगे तो अपमान होगा और मम्मी-पापा गुस्सा करेंगे। बस, इसी डर से हम अपनी गलती किसी को बताते नहीं हैं। लेकिन आज तुमने मुझे सच्ची बात बता दी तो तुम्हें हल्का लगा ना?" मिस ने पूछा.

"हाँ, मिस...." हिरवा ने कबूल किया।

"किसी गलती की सज़ा एक बार भुगत लेना अच्छा है या सालों तक उसे भुगतते रहना अच्छा है?" मिस ने पूछा।

"एक ही बार, मिस!" हिरवा ने तुरंत जवाब दिया।

"तो, तुम क्यों अपनी गलती की सज़ा इतने सालों से भुगत रही हो? गलती को छुपाकर तुमने सालों तक

डर का भूत मन में बिठाकर रखा। यदि हम अपनी गलती को स्वीकार कर लें तो एक ही बार सजा मिलती है और बात वहीं के वहीं खत्म हो जाती है। और सचमुच यदि हम सच्चे दिल से गलती का पश्चाताप करके माफ़ी माँग लेते हैं तो न सिर्फ हमें माफ़ी मिलती है बल्कि हमारा डर भी गायब हो जाता है और हम हल्का महसूस करते हैं। गलती स्वीकार कर लेने से है न डबल फायदा!?"

"हाँ, मैं आज ही मम्मी-पापा से माफ़ी माँगकर अपने डर को फुर्ररर कर दूँगी", हिरवा ने उत्साहित होकर कहा।

बुधवार का दिन आया और पहली बार हिरवा स्पोर्ट्स के पीरियड का इतंज़ार कर रही थी।

यह तो नई ही बात है!

'पसंद नहीं है' ऐसा कहने से पहले अभाव होता है,
फिर धीरे-धीरे भय उत्पन्न होने लगता है।

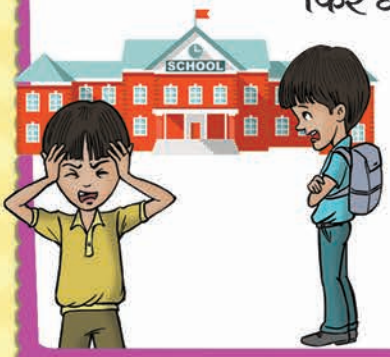

उ.दा. स्कूल जाना 'पसंद नहीं है, पसंद नहीं है' ऐसा कहने से स्कूल में घुसते ही भय लगने लगता है। और 'बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है' कहने से भय निकल जाता है।

यदि कोई इंसान पसंद नहीं हो तो उसे देखकर भय लगने लगता है। तब उस व्यक्ति के लिए मन में प्रतिक्रमण करते हैं तो भय खत्म हो जाता है।

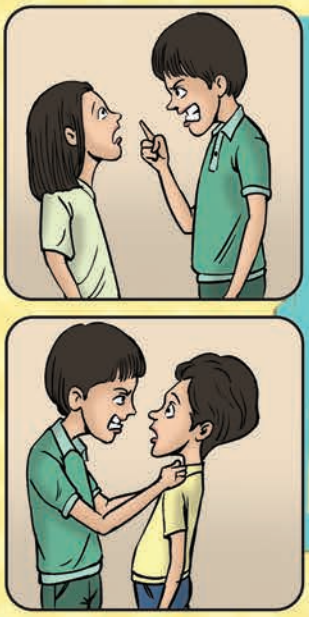

यदि कुछ गलत हो जाने का डर लगता है तो अच्छा है, दूसरों को दुःख देने में डर लगना ही चाहिए। पाप करने से डरना चाहिए लेकिन किसी और चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं है।

चिढ़ की वजह से भय लगता है।

उ.दा. साँप, छिपकली आदि पर चिढ़ होती है इसलिए भय लगता है, लेकिन यदि उनके अंदर बैठे हुए भगवान के दर्शन करें तो चिढ़ नहीं रहेगी और भय भी खत्म हो जाएगा।

गब्बर सिंह यह कहकर गया, जो डर गया वो...

ही.....हा...हा...हा... मैं डर हूँ। मैं तुमसे अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह से मिलता हूँ।

कभी अँधेरे में!

तो कभी पलंग के नीचे रहकर तुम्हें डराता हूँ...

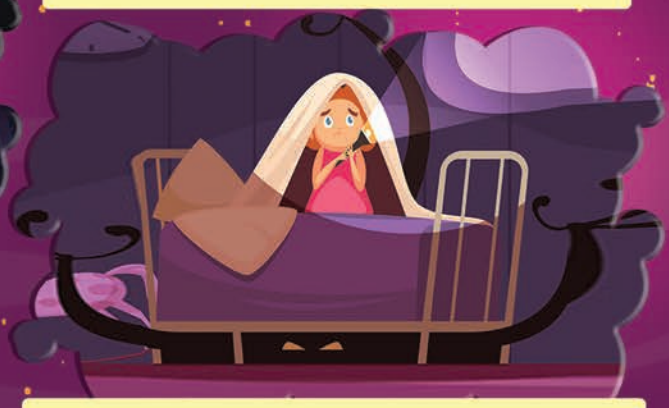

तो कईयों को परीक्षा के समय कॉन्सटेन्ट कंपनी देता हूँ।

कई बार तो स्टेज या खेल के मैदान में तुम सारी तैयारी करके गए हो लेकिन मेरी एन्ट्री होते ही तुम्हें पसीने छूटने लगते हैं। सही है न?

लेकिन, क्या मैं सभी को डरा सकता हूँ? नहीं! इस वर्ल्ड में कुछ वीरों ने मुझे हरा दिया है। मुझे हराने का उपाय है तो बहुत ही सिम्पल! लेकिन जब तक वह उपाय एप्लाइ नहीं होगा तब तक मैं जीतता ही रहूँगा! चलो, देखते हैं कि मुझे भी जिनके सामने हारना अच्छा लगता है ऐसे ज्ञानी ने मुझे किस तरह हराया!

अजब-गजब की यात्रा

चलो देखते हैं, दादाश्री के साथ यात्रा में महात्माओं का डर किस तरह हुआ फुर्ररर्र...

१९७३ में करीब तीस महात्मा दादाश्री के साथ एक लग्ज़री बस में यात्रा के लिए निकले थे। रात के बारह बजे थे। बस उत्तर प्रदेश के बरेली शहर पहुँची। यात्रा के प्लान के अनुसार बरेली से रात में आगे चंबल की भयानक घाटियों से होते हुए सफर तय करना था। तभी चौराहे के पास वाली पुलिस चौकी पर पुलिस ने बस को रोका। पुलिस ने सख्ती से कहा कि "आगे नहीं जाने मिलेगा क्योंकि वह इलाका डाकूओं से भरा पड़ा है और आधे घंटे पहले ही डाकूओं ने दो बसों को लूटा है।"

दादाश्री ने पुलिस को समझाते हुए कहा कि "हमें कुछ नहीं होगा। हो सकता है कि जब हमारी बस वहाँ से निकले तब डाकू चाय पीने गए हों!" दादाश्री के प्रभाव के कारण पुलिस वालों ने उनकी बात मान ली और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दो बंदूकधारी पुलिस वालों को बस में बैठा दिया। यह सब होने से कई महात्मा जो बस में सो गए थे वे जाग गए। पुलिस वालों को देखकर किसी भी महात्मा को घबराहट ना हो या तो उन्हें नेगेटिव विचार ना आए इसलिए दादा ने सभी महात्माओं को ज़ोर-ज़ोर से च रणविधि बोलने के लिए कहा। दादाश्री कहते हैं कि नियम ऐसा है कि अगर हमें नेगेटिव उत्पन्न हो तो काम बिगड़ता है। लेकिन चरणविधि बोलने से नेगेटिव विचार नहीं आए और घबराहट भी नहीं हुई और आराम से बस घाटियों में से निकल गई!

इस तरह दादाश्री की अफलातून चाबी के कारण न तो महात्माओं को डाकूओं ने परेशान किया, ना ही डाकूओं के डर ने!

स्टोरी का video देखने QR code Scan करें।
https://kids.dadabhagwan.org/gallery/videos/All+Languaes/All+Categories/Lets+be+fearless/

ऐतिहासिक गौरव गाथा

एक नगर में एक पंडितजी रहते थे। वे व्याकरण, वेद, उपनिषद् आदि पढ़ाते थे। तय किए हुए नियम के अनुसार वे शिक्षा के बदले में किसी से भी कुछ लेते नहीं थे। पंडितजी का नसीब भी ऐसा खोटा कि लोग भी उनकी कदर नहीं करते थे। सालों बीत गए और उनके पास जो धन था वह खत्म हो गया। परिस्थिति इतनी खराब हो गई कि वे अपने बच्चों को दूध भी नहीं पिला पाते थे।

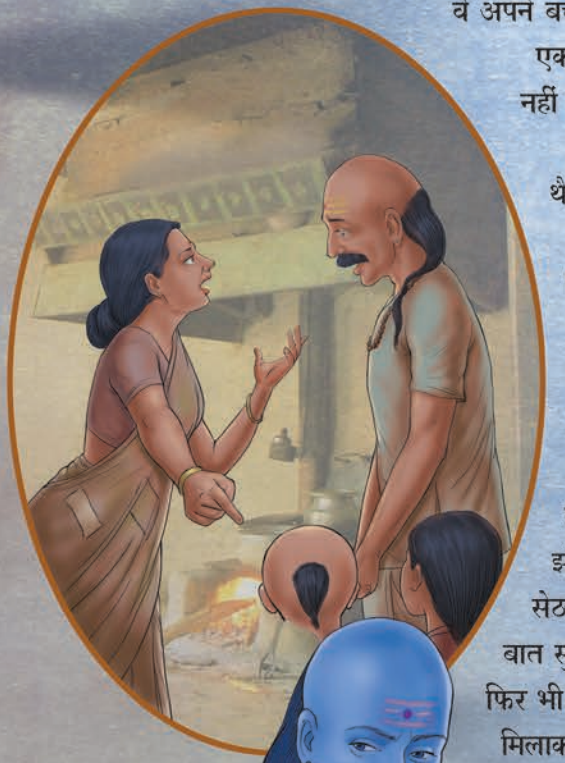

एक दिन पंडितजी की पत्नी ने कहा, "अब यदि आपसे और कोई काम नहीं हो पाता हो तो पंडिताई छोड़कर चोरी का धंधा करना शुरू कर दो! " एक रात दस बजे के बाद, पंडितजी ताला तोड़ने के औजार थैली में भरकर छुपते-छुपाते नगर की ओर निकल पड़े।

पहले वे जिस घर में पहुँचे वहाँ पत्नी अपने पति से कह रही थी कि "कल के खाने के लिए अनाज का एक दाना भी घर में नहीं है, क्या करेंगे? बच्चे भूखे हैं।"

यह सुनते ही पंडितजी ने सोचा "अरे, इतने गरीब घर में कहीं चोरी की जाती होगी!"

इसके बाद उन्होंने किसी धनिक की हवेली को चुना। रात के बारह बजे थे। पहली मंजिल पर चढ़कर पंडितजी ने खिड़की से झाँककर देखा तो पाया कि सेठजी बैठे हुए थे। दीया जल रहा था। सेठजी बही खाते के पन्ने पलट रहे थे। पंडितजी ने ध्यान देकर सेठ की बात सुनने की कोशिश की। सेठ कह रहे थे, "ओह! आधी रात बीत गई फिर भी दो पैसे का हिसाब नहीं मिल रहा। चाहे कुछ भी हो लेकिन हिसाब मिलाकर ही छोड़ूँगा। भले ही फिर चार आने का तेल दीए में जल जाए!" यह सुनकर चोरी का पाप करने के डर से काँपते हुए पंडितजी ने सोचा कि "यदि मैं इसके घर पाँच-दस हज़ार की चोरी करूँगा तो दूसरे ही दिन बेचारे के प्राण निकल जाएँगे। ना बाबा ना, इसके यहाँ तो चोरी करनी ही नहीं चाहिए। मुझे तो सिर्फ भूख का ही दुःख है, इस बेचारे को तो बीसीयों दुःख हैं!"

पंडितजी का मन कहीं भी चोरी करने के लिए तैयार ही नहीं हुआ। चोरी का पाप करने में उन्हें डर लग रहा था। लेकिन दूसरी ओर पत्नी का भय भी सता रहा था। खाली हाथ लौटने की उनमें हिम्मत नहीं थी। इसलिए वे आगे बढ़ें और चोरी करने के लिए राजा

के महल में गए। बहुत ही सावधानी से वे तीसरी मंज़िल पर पहुँचे। रात के तीन बजे थे। पंडितजी ने खिड़की में से देखा तो पाया कि राजा कुछ बुदबुदाते हुए शयन कक्ष में अकेले ही चक्कर लगा रहे थे। ध्यान से सुनने पर पंडितजी को सुनाई दिया कि "तीन पंक्तियाँ तो मिल गईं लेकिन श्लोक की चौथी पंक्ति नहीं मिल रही है।"

पंडितजी ने देखा तो दीवार पर संस्कृत में तीन पंक्तियाँ लिखी हुई थीं जिनका अर्थ था कि "मुझे मनोहर पत्नी मिली है, अनुकूल मित्र मिले हैं, सुंदर भाई मिले हैं, अच्छे नौकर मिले हैं, मेरे पास बलवान हाथी हैं और तेज घोड़े भी हैं..."

पंडितजी के लिए चौथी पंक्ति लिखना बहुत आसान था। चौथी पंक्ति नहीं मिलने पर ऊब कर राजा गहरी नींद सो गए। पंडितजी बिल्ली की तरह चुपके से राजा के शयन कक्ष में घुस गए और जैसे ही चौथी पंक्ति लिखने गए कि तभी उन्हें विचार आया कि "क्या चोर कभी किसी को बोध देने के लायक माना जाता है? नही! इसलिए सब से पहले तो मुझे यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि जीवन में कभी भी किसी भी परिस्थिति में चोरी नहीं करनी चाहिए।"

पंडितजी ने मन ही मन प्रतिज्ञा ली और फिर चौथी पंक्ति लिखी, जिसका अर्थ था कि "इसमें से कुछ भी आपके काम में आने वाला नहीं है।" और पंडितजी कुछ भी चोरी किए बिना घर वापस लौट गए। पत्नी सो रही थी। वे खुद भी चुपचाप सो गए। सुबह उठकर जब पत्नी को सारी बात बताई तो पत्नी ने उन्हें फटकार लगाई।

उसी समय नगर में ढिंढोरा पीटने की आवाज सुनाई दी, "रात को राजा जी के शयन कक्ष में आकर जिस व्यक्ति ने श्लोक की चौथी लाइन लिखी है वह राजा के पास हाज़िर हो।"

पंडितजी राजा के पास गए। राजा ने पंडितजी को बहुत सारा धन इनाम में दिया और कहा, "पंडितजी आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। आपने मुझे बहुत सुंदर बोध दिया है।"

और इस तरह चोरी के डर के कारण पंडितजी पाप करने से बच गए और साथ ही साथ उन्होंने बड़ा इनाम भी पाया। इसलिए मित्रों, किसी और चीज़ से मत डरना लेकिन गलत काम करने से ज़रूर डरना!

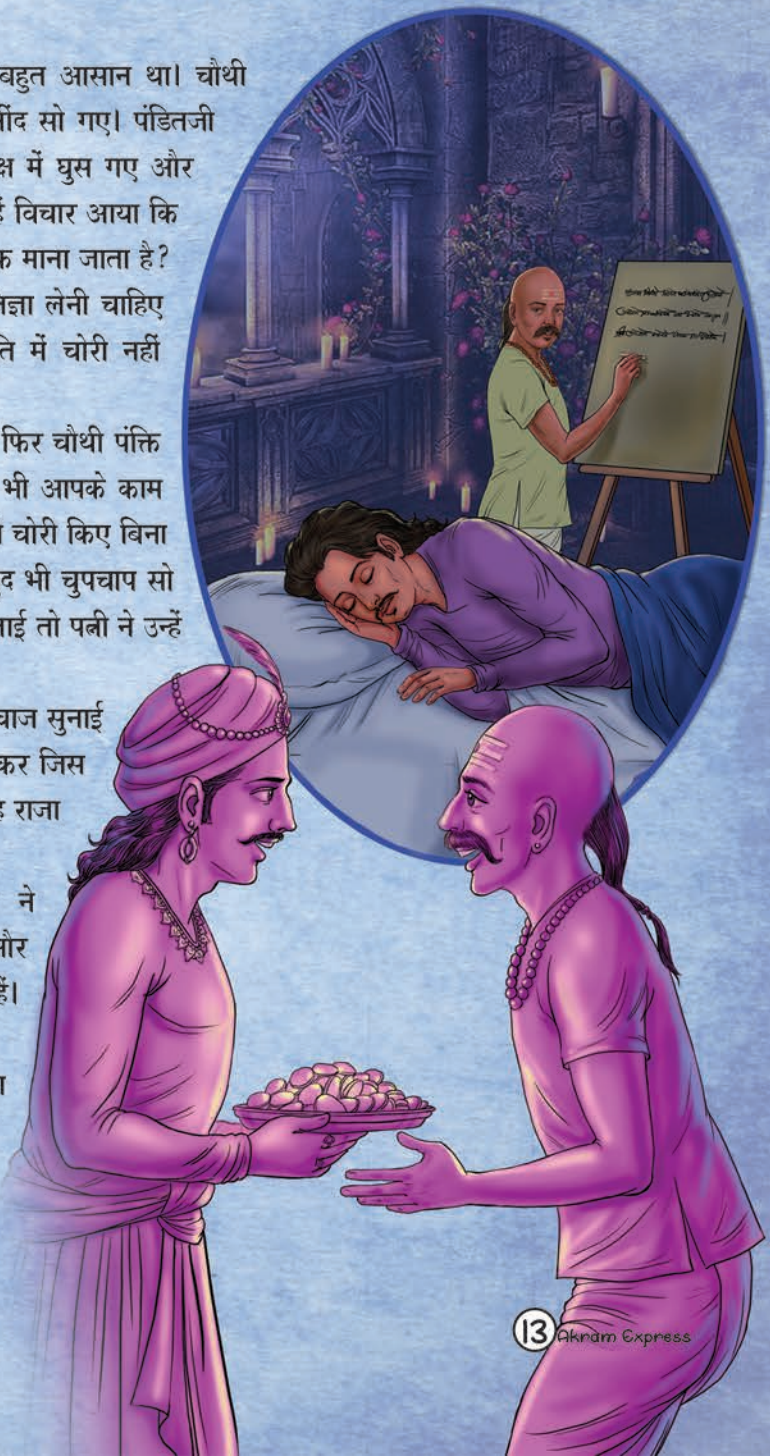

Baby Mht & Little Mht ने मचाई धमा-चौकड़ी in Fusion 2021 JJ 114 2021 और Kids care में

डबल लॉटरी

कल हम सभी अल्डोराडो वॉटर पार्क जा रहे हैं! रेडी?

यो...यो...अल्डोराडो वॉटर पार्क जाएँगे, पानी में एन्जॉय करेंगे!

दूसरे दिन,

क्या हुआ कृषिव? तुम तैयार क्यों नहीं हुए?

दादी, मुझे वाटर पार्क की राइड्स में डर लगता है। मुझे तो पानी से ही डर लगता है। मुझे नहीं आना।

अरे कृषिव, एक बार अनुभव तो करके देखो कि सचमुच पानी से डरने जैसा कुछ है या नहीं?!

नहीं, मुझे कोई अनुभव नहीं करना। डर लगता है मतलब डर लगता है, बस!!

कोई बात नहीं। तुम राइड्स में मत बैठना। लेकिन तुम्हें चलना तो पड़ेगा ही।

दादी ने ज़बरदस्ती कृषिव को गाड़ी में बैठा दिया।

पार्क में,

मम्मा, कितनी अच्छी-अच्छी, ऊँची-ऊँची राइड्स हैं! मैं सब से पहले 'ट्विस्टर राइड' में बैठूँगी।

कृषिव के अलावा सभी ने तय कर लिया कि वे सब से पहले किस राइड में बैठेंगे।

दादा, दादी (एक राइड में बैठकर गाते हुए): ऊपर से नीचे आते हैं, नीचे आकर पानी में गिर जाते हैं। एक बार फिर छोटे बच्चे बनकर, पानी में छप-छप करते हैं!

मम्मी और पापा 'जंगल लगून' राइड में बैठें।

चल न कृषिव, बहुत मज़ा आएगा।

नहीं मम्मा, आइ एम फ़ाइन।

एक कोने में बैठकर कृषिव सभी को देख रहा था।

दोपहर हो गई,

ओह गॉड, इन लोगों की राइड्स कब पूरी होगी! भूख लगी है और बोरियत की तो हद हो गई!

कृषिव आइस्क्रीम स्टॉल की तरफ बढ़ रहा था। तभी अचानक,

ओह नो! यह बच्चा तो पानी में डूब रहा है।

एक सेकंड भी सोचे बिना, कृषिव पानी में कूद पड़ा और उसने बच्चे को बाहर निकाला।

तब तक बच्चे के मम्मी-पापा वहाँ आ गए।

थैंक यू बेटा! मुझे पता ही नहीं चला कि नीव कब स्लाइड से स्लिप हो गया। आज तुमने हमारे बेटे की जान बचाई। क्या नाम है तुम्हारा?

कृषिव।

थैंक यू कृषिव। यू आर ए ब्रेव बॉय।

ब्रेव शब्द सुनते ही कृषिव को ध्यान में आया कि वह पानी में खड़ा था।

मुझे तो पानी से डर लगता है। लेकिन? पानी में जाने से कुछ हुआ नहीं।

कृषिव तुरंत पानी से बाहर आ गया।

थैंक यू आंटी!

दादी सही कहती थीं। अनुभव करके निष्कर्ष निकालना चाहिए कि सच में डरने जैसा कुछ है या नहीं?! मैं पानी में जाने से डरता था लेकिन इसमें डरने जैसा कुछ था ही नहीं।

कृषिव ने अपने परिवार वालों को पूरी बात बताई।
हमारा ब्रेव बेटा!

तो मेरा ब्रेव बेटा मेरे साथ स्नेक राइड में बैठेगा?
श्योर दादाजी!

कृषिव को राइड में बहुत मज़ा आया।
चलो, अब घर जाने का टाइम हो गया।
लेकिन पापा, अभी तो मैं सभी राइड्स में बैठा भी नहीं हूँ।

आज के दिन बहादुरी दिखाने वाले बालक कृषिव को वॉटर पार्क की ओर से एक दिन की फ्री फैमिली टिकिट मिलती है।

आज तो मुझे डबल लॉटरी लगी! मेरा डर छूमंतर हो गया और मुझे सभी से बधाइयाँ भी मिलीं!

जंतर मंतर छूमंतर

एक मैजिक स्टिक से मैं डर को कर सकता हूँ छूमंतर! चलो, नीचे दिए गए स्टार्स और मंत्र की पट्टियाँ काटकर डर को छूमंतर करने की मैजिक स्टीक बनाते हैं...

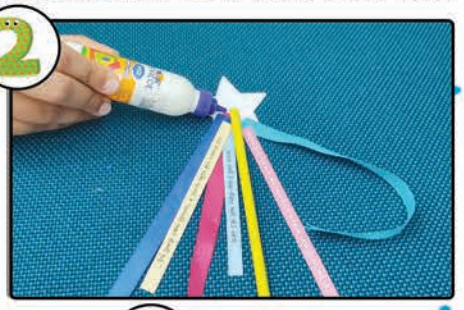

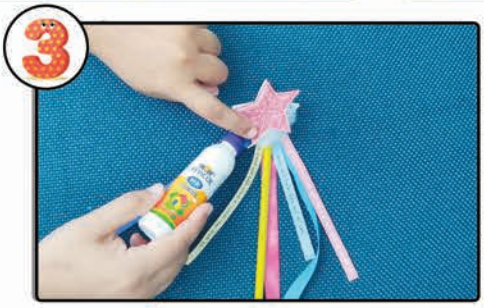

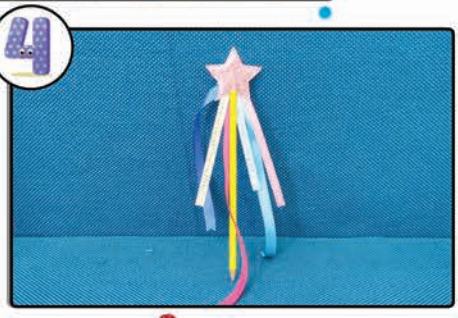

दादा भगवान से शक्ति माँगना कि "मैं भय से मुक्त हो सकूँ ऐसी शक्ति दीजिए।"

जब किसी व्यक्ति के प्रति भय लगे तो मन में उनका प्रतिक्रमण करने से भय खत्म हो जाता है।

प्रार्थना करना कि दादा-नीरू माँ मेरे साथ रहना।

Akram Express

December 2021
Year : 13, Issue : 8
Conti. Issue No.: 105

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेवल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेवल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025